RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-11
November -2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

सांख्य-योग दर्शन परिभाषा डेटाबेस एवं ऑनलाइन खोज

[1]अञ्जु, [*2]चन्द्र, सुभाष

[1] *पीएच.डी. (शोधार्थी), संस्कृत विभाग, कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत*

[*2] *सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग, कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत*

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 10 November 2018

Keywords
सांख्य-योग दर्शन, सांख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्द, परिभाषा कोश, ऑनलाइन सर्च, ई-ग्लॉसरी।

[*]Corresponding Author
Email: subhash.jnu[at]gmail.com

ABSTRACT

ऑनलाइन सांख्य-योग दर्शन परिभाषा डेटाबेस विकास एक शोध के रूप में प्रारम्भ किया गया जिसका उद्देश्य हिंदी माध्यम से सांख्य-योग दर्शन परिभाषा डेटाबेस एवं खोज सिस्टम का विकास करना है। क्योंकि सांख्य-योग दर्शन परिभाषा के लिये कोई भी ऑनलाइन डेटाबेस अभी तक उपलब्ध नही है। जिससे प्रयोगकर्ता ऑनलाइन पारिभाषिक शब्दों को खोज सकें। अभी तक इस डेटाबेस में सांख्य दर्शन के कुल 100 तथा योग के कुल 295 तकनीकी शब्दों को शामिल किया गया हैं। इनमें वृद्धि भी की जा रही है। इनका संकलन सांख्य एवं योग दर्शन के मूल एवं भाष्य ग्रन्थों के आधार पर किया गया है। यह सिस्टम http://cl.sanskrit.du.ac.in/SankhyaYoga पर ऑनलाइन उपलब्ध है। भारतीय दार्शनिक परंपरा को सिद्धान्तवादी आस्तिक और नास्तिक दो रूपों में विभाजित करते हैं। जिनमें से वेद को आधार स्वीकार करने वाले छः आस्तिक दर्शन हैं – पूर्वमीमांसा, वेदान्त, सांख्य, योग, न्याय एवं वैशेषिक। इनके विपरीत बौद्ध, जैन तथा चार्वाक नास्तिक दर्शन की श्रेणी में आते हैं। विभिन्न दर्शनों की अपनी एक विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली होती हैं। इनके सम्यक् ज्ञान के बिना इनमें प्रवेश पाना कठिन होता है। अतः इन पारिभाषिक शब्दों के ज्ञान हेतु विद्वानों ने विभिन्न दर्शनों से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्दों पर बहुशः कार्य किये हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के आधुनिक युग में स्मार्ट फोन तथा इन्टरनेट के कारण आज जनसामान्य तत्काल सूचनायें प्राप्त करने का इच्छुक है। भारत सरकार ने भी डिजिटल इण्डिया के सन्देश के फलस्वरूप ऑनलाइन सेवाओं का वर्द्धन किया है। यह सिस्टम इस उद्देश्य को भी पूरा करता है। इस शोधपत्र का उद्देश्य सांख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के लिये वेब आधारित ई-सिस्टम का प्रदर्शन करना है।

1. पृष्ठभूमि एवं प्रेरणा (Background and Motivation)

वेदों का अन्तिम भाग उपनिषद् को माना जाता है। जिन्हें वेदों का सार अथवा वेदों का दार्शनिक भाग भी कहा जाता है। संस्कृत भाषा में निबद्ध उपनिषद् ही समस्त भारतीय दर्शन के मूल स्त्रोत हैं (Banerji, 1989)। भारत में दर्शन का जन्म मानव जीवन को दुखों से निवृत दिलाने के लिए तथा तत्व साक्षात्कार कराने के उद्देश्य के फलस्वरूप हुआ है। पाणिनि व्याकरण के अनुसार 'दर्शन' शब्द 'दृशिर् प्रेक्षणे' धातु से ल्युट् प्रत्यय होकर व्युत्पन्न हुआ है। दर्शन शब्द का शब्दार्थ केवल देखना मात्र नहीं है अपितु प्रकृष्ट ईक्षण, जिसमें अन्तःचक्षुओं द्वारा वह देखना है जो सामान्य चक्षुओं से देखा नहीं जा सकता है। भारतीय दर्शन में महर्षि कपिल द्वारा रचित सांख्य द्वैतवादी दर्शन है जो प्राचीन समय में अतीव लोकप्रिय एवं प्रचलित हुआ था (Bhattacharya & Larson, 1987)। द्वैतवादी होने के कारण यह अद्वैतवेदान्त से विपरीत माना जाता है। इस दर्शन में प्रकृति तथा पुरुष नामक दो तत्व स्वीकृत हैं। सांख्यसूत्र में 6 अध्याय तथा 527 सूत्र हैं; जिनमें प्रायः 100 पारिभाषिक शब्दों का संकलन हुआ है। पतञ्जलि मुनि ने योग दर्शन का निर्माण किया है। योग दर्शन प्रकृति, पुरुष के स्वरुप के साथ ईश्वर के अस्तित्व को मानते हुए मनुष्य जीवन की उन्नति के लिये एक अति व्यावहारिक और मनोवैज्ञानिक रूप से प्रस्तुत करता है। योगसूत्रों की सर्वोत्तम व्याख्या व्यास मुनि द्वारा लिखित व्यासभाष्य में प्राप्त होती है। योगसूत्र में 4 पाद तथा 195 सूत्र हैं जिनमें प्रायः 295 पारिभाषिक शब्द निबद्ध हैं। उदाहरण स्वरूप पारिभाषिक शब्दों का प्रारूप तालिका 1 में प्रदर्शित किया गया है।

सांख्य-योग दर्शन परिभाषा डेटाबेस एवं ऑनलाइन खोज की प्रेरणा आजकल सूचना प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रयोग से मिली है। स्मार्ट फोन के सुलभ पहुंच के कारण हर किसे को सभी क्षेत्र की सूचनाएं तत्काल एवं इंटरनेट के माध्यम से ही चाहिये। भारत सरकार ने भी डिजिटल इण्डिया के सन्देश के फलस्वरूप ऑनलाइन सेवाओं का वर्द्धन किया है। सांख्य-योग के लिये अभी तक ऐसा कोई भी सिस्टम विकसित नहीं किया गया है। जिसके माध्यम से सूचनाएं प्राप्त की जा सके। अतः इस प्रकार के सिस्टम के निर्माण करने का निर्णय लिया गया। यही इसकी प्रेरणा का स्त्रोत है। अभी तक यह सिस्टम मोबाइल प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध नहीं है। परन्तु जल्दी ही इसे इसके योग्य बनाने का प्रयास किया जायेगा।

2. उद्देश्य (Objectives)

इस शोधपत्र का उद्देश्य 'सांख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों के लिये वेब आधारित ई-सिस्टम' का प्रदर्शन करना है। जिसकी सहायता

RRIJM 2015, All Rights Reserved

से कोई भी जिज्ञासु इन दर्शनों से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान प्राप्त कर सकेगा।

3. सर्वेक्षण (Review)

समसामयिक युग में सूचना प्रौद्योगिकी का क्षेत्र सम्पूर्ण विश्व में अति तीव्र गति से विस्तृत हो रहा है । इसके फलस्वरूप प्रत्येक व्यक्ति इंटरनेट के माध्यम से तत्काल ज्ञानसामग्री प्राप्त करना चाहता है। संस्कृत भाषा से सम्बन्धित सङ्गणकीय भाषाविज्ञान के क्षेत्र में, अनेक संस्थान इस प्रकार के निर्माण के लिए कार्यरत हैं। जिनमें से जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस्ड कंप्यूटिंग (सीडैक), हैदराबाद विश्वविद्यालय और दिल्ली विश्वविद्यालय मुख्य संस्थान शोध और विकास कर रहे हैं।

भारत में स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय दर्शन पर विश्वकोशीय लेखन का कार्य प्रारम्भ किया गया। इस पर चार महत्त्वपूर्ण प्रयास किये गये । प्रथम प्रयास अमेरिका के कार्ल एच. पॉट्टर द्वारा 'इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इण्डियन फिलॉसफ़ी (The Encyclopedia of Indian Philosophies) के रूप में किया गया। इन्होंने इसको 23 भागों में प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना 1968 में ही बनायी थी (Potter, 2014 and Potter, 1970)। इस विश्वकोश के कई एक खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं और शेष प्रकाशनाधीन हैं। इस क्षेत्र में दूसरा प्रयास इण्डिया हैरिटेज फ़ाउंडेशन द्वारा 1980 के दशक में किया गया और पूर्वी-पश्चिमी विद्वानों के सहयोग से ग्यारह भागों में 'इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ हिन्दूइज़्म (Encyclopedia of Hinduism)' तैयार किया गया है। कैलिफ़ोर्निया के के.एल. शेषगिरि राव इसके प्रधान सम्पादक, दिल्ली के कपिल कपूर इसके सम्पादक हैं (Rao and Kapoor, 2010)। इनसे भिन्न भारतीय दर्शन बृहत्कोश का निर्माण अर्जुन मिश्र के निर्देशन एवं बच्चूलाल अवस्थी के शोध एवं लेखन में इसका निर्माण 1980 के दशक में सागर विश्वविद्यालय द्वारा कराया गया था (अवस्थी, 1997)। यह कुल सात खण्डों में उपलब्ध है। इसी क्षेत्र मे सराहनीय एवं प्रामाणिक प्रयास देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय (1931) के नेतृत्व में 'प्रोजेक्ट ऑफ़ हिस्ट्री ऑफ़ साइंस, फ़िलॉसफ़ी ऐंड कल्चर' के तहत किया गया है। यह परियोजना मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित एक बड़े पैमाने पर साहित्यिक परियोजना थी (Project of History of Indian Science, Philosophy and Culture) । समस्त भारतीय बौद्धिक सम्पदाओं को एक व्यापक अवधारणात्मक योजना में समाहित करने वाली इस महान परियोजना के 115 खण्डों का प्रकाशन पूर्ण होने की स्थिति में है। इस क्षेत्र में सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान भारतीय दर्शन परिभाषा कोश (शुक्ल,1993) है। यह कार्य भारतीय दर्शन से सम्बन्धित तकनीके शब्दों का एक संग्रह है जिसमें दर्शन में प्राप्त सभी शब्दावलियों की परिभाषाएं मूल टेक्ट के साथ-साथ हिन्दी में भी प्रदान की गई है। यह एक पुस्तक के रूप में उपलब्ध है । A concise dictionary of Indian philosophy (Grimes, 1996) भी एक शब्दकोश है जिसमें दर्शन से सम्बन्धित शब्दों का संग्रह किया गया है। इसमें प्रायः प्रयोग किये जाने वाले धार्मिक शब्दों और अनेक व्युत्पत्ति संबंधी व्युत्पन्न शब्दों का 500 से अधिक शब्दों को शामिल किया गया है। यह भारतीय दर्शनशास्त्र के लिये एक संक्षिप्त शब्दकोश अंग्रेजी अनुवाद के साथ देवनागरी और रोमन लिप्यंतरण दोनों में उपलब्ध है । इनके अतिरिक्त Dictionary of Indian Philosophical Concepts (Singh, 1988), Dictionary of philosophy and psychology (James, 2002), A Conceptual Dictionary of Technical Terms in Yoga Philosophy (Swami, 2015), न्यायकोश (शास्त्री, 1928) आदि कार्य भी भारतीय दर्शन से सम्बन्धित हैं।

भारतीय दर्शन से सम्बधित तकनीकी शब्दों के लिये ऑनलाइन डेटाबेस की अवधारणा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय द्वारा प्रारम्भ की गई। इस केन्द्र द्वारा अनेक कार्य किये जा रहे है इनमें से कतिपय कार्य प्रस्तुत शोधपत्र के विषयक हैं - योग शब्दकोश (Yadav and Upadhyaya, 2009), योगसूत्र अनुक्रमणिका (Gautam, 2009), DICTIONARY OF SANKHYA, YOGA & VEDANTA (Jain, 2007), ब्रह्मसूत्र अनुक्रमणिका (Sanjay, 2008), वेदांत-अनुक्रमणी (Singh, 2009) आदि प्रमुख हैं।

संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय ने भी संस्कृत भाषा के लिये तकनीक विकास के क्षेत्र में अपना योगदान दिया है। इनके विभिन्न सङ्गणकीय तन्त्रों में से ऋग्वैदिक सर्च (Kumar, 2016), पौराणिक सर्च (Chandra & Anju, 2017), सांख्य-योग पारिभाषिक शब्द सूचना तंत्र (Anju & Chandra,2018a,b) आदि दो कार्य तत्काल खोज से सम्बन्धित है। इनका उद्देश्य संस्कृत पाठ सर्च बनाना है जिसके माध्यम से किसी भी संस्कृत टेक्स्ट में ऑनलाइन सर्च किया जा सकता है।

Table 1: पारिभाषिक शब्द डेटाबेस का प्रारूप

क्र.स.	योग दर्शन	सांख्य दर्शन
1	अविरति	अपवर्ग
2	अतीतानागतज्ञान	अध्यवसाय
3	दुःख	अनुमान
4	अक्लिष्ट	पुरुषार्थत्व
5	दौर्मनस्य	अधिकारि

अब तक जितने भी कार्य हुए हैं या तो वह पुस्तक के रूप में उपलब्ध है या इंटरनेट पर पीडीएफ के रूप में। इन दोनों ही रूपों में खोज ऑनलाइन संभव नहीं होती है जिससे सबकी पहुंच नहीं हो पाती है। साथ ही साथ तत्काल सूचना निकालना सम्भव नहीं होता है। अतः प्रस्तुत शोध की उपयोगिता बढ़ जाती है। और इस प्रकार का यह

RRIJM 2015, All Rights Reserved

अनोखा एवं प्रथम प्रयास होगा जो उपयोगकर्ताओं के लिये बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा।

4. सामग्री एवं शोध प्रविधि (Material & Methods)

सांख्य-योग दर्शन के परिभाषा कोश के निर्माण हेतु मुख्य रूप से सांख्यसूत्र, सांख्यकारिका तथा योगसूत्र और इनके साथ साथ सांख्यप्रवचनभाष्य, व्यासभाष्य, भोजवृत्ति, तत्त्ववैशारदी एवं योगवार्त्तिक को आधारित कर पारिभाषिक शब्दों का संकलन किया है।

Table 2: पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषण डेटाबेस का प्रारूप

क्र.स.	विश्लेषण
1	'अप' उपसर्ग सहित 'वृजी वर्जने' धातु से 'घञ्' प्रत्यय करने पर 'अपवर्ग' शब्द निष्पन्न होता है ....
2	अध्यवसाय शब्द मुख्यरूप से निश्चयार्थ वाचक है। जो अधि तथा अव उपसर्ग के साथ 'षो अन्तःकर्मणि' धातु से .....
3	अनु उपसर्गपूर्वक 'मा माने' धातु से ल्युट्प्रत्यय होकर अनुमान शब्द सिद्ध होता है। ....
4	कपिलमुनि ने पुरुषार्थ और अत्यन्तपुरुषार्थ को भिन्नतया ग्रहण किया है .....
5	किसी भी ग्रन्थ को पढने का एक अधिकारी होता है। वेदान्तसार में भी कहा गया है .....

सबसे पहले सांख्य–योग दर्शन के परिभाषा कोश के लिये चुने हुए मूल ग्रथों एवं भाष्य ग्रन्थों के आधार पर प्राप्त होने वाले पारिभाषिक शब्दों का संकलन किया गया। जिसका प्रारूप तालिका संख्या एक में देखा जा सकता है। इनकों देवनागरी लिपि में यूनीकोड में डेटाबेस मे स्टोर किया गया। ई-सिस्टम निर्माण में निम्नलिखित चरण अनुसरित किये गये हैं –

1. मूल तथा प्रकरण ग्रन्थों को मुख्य रूप से आधार बनाकर सांख्य दर्शन के 100 तथा योग के 295 पारिभाषिक शब्दों का संकलन किया गया है तथा इसे डेटाबेस में प्रविष्ट किया गया। इस डेटाबेस में अन्य शब्दों को भी बढ़ाया जा रहा है।
2. इन पारिभाषिक शब्दों के लिये इनसे सम्बन्धित सूचनाओं के लिये एक डेटाबेस का विकास किया गया है। जिनमें तकनीकी शब्दों से सम्बन्धित परिभाषाएं, लक्षण एवं अन्य सूचनाएं शामिल की गई हैं।

Table 3: सांख्य-योग पारिभाषिक शब्दों की जानकारी के डेटाबेस का प्रारूप

क्र.स.	पारिभाषिक शब्द	लक्षणसूत्र
1	अपवर्ग	इतरैतरवद्दोषात्
2	अध्यवसाय	अध्यवसायो बुद्धिः
3	अनुमान	प्रतिबन्धदृशः प्रतिबद्धज्ञानमनुमानम्
4	पुरुषार्थत्व	प्रात्यहिकक्षुत्प्रतीकारवत्तत्प्रतीकारचेष्टनात् पुरुषार्थत्वम्
5	अधिकारि	अधिकारित्र्यैविध्यान्न नियमः, अधिकारिप्रभेदान्न नियमः, अधिकारित्रैविध्यान्न नियमः

डेटा निर्माण के लिये संगणकीय भाषाविज्ञान एवं सॉफ्टवेयर आभियान्त्रिकी की पाठ संरक्षण (Text Preservation) तथा ऑनलाइन सर्च के लिये सूचना पुनर्प्राप्ति और सूचना निष्कर्षण (Information Retrieval and Information Extraction) विधियों का प्रयोग किया गया है। मुख्य रूप से बूलियन खोज (Boolean Search Method) के माध्यम से सर्च किया जाता है (Frants et al, 1999)। यह सिस्टम एक विभिन्न चरणों के माध्यम से कार्य करता है। इसकी संरचना Figure 1 के माध्यम से समझा जा सकता है।

5. सांख्य-योग दर्शन परिभाषा डेटाबेस एवं ऑनलाइन खोज सिस्टम के मुख्य घटक (Major Components of Technical Terms Database and Search System for Samkhya-Yoga Philosophy)

प्रस्तुत सिस्टम के मुख्य घटक रूप से चार घटक हैं जिनके माध्यम से सिस्टम सर्च किये गये शब्दों से सम्बन्धित परिणाम प्रदर्शित करता है। जिनमें टर्म वैलिडेटर (Term Validator), सूचना जेनरेटर (Info Generator), टर्म विश्लेषक (Term Analyzer) एवं ऑउटपुट जनेरेटर (Output Generator) विद्यमान हैं।

1.1. टर्म वैलिडेटर (Term Validator)

यह घटक यूजर द्वारा प्रदत्त पारिभाषिक इन्पुट को चेक करता है कि प्रस्तुत शब्द सांख्य-योग दर्शन से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्द है या नहीं। यह प्रक्रिया पारिभाषिक शब्दों के डेटाबेस की सहायता से की जाती है। जिसका प्रारूप तालिका सं. 1 में देखा जा सकता है। इन्पुट टेक्स्ट के सफल सत्यापन उपरान्त यह घटक पारिभाषिक शब्द को अगले घटक को सम्प्रेषित करता है। अन्यथा यूजर इन्टरफेस पर "यह सांख्य-योग का पारिभाषिक शब्द नहीं है" टैग के साथ सन्देश प्रदर्शित करता है।

Figure 1: सांख्य-योग दर्शन परिभाषा डेटाबेस एवं ऑनलाइन खोज संरचना

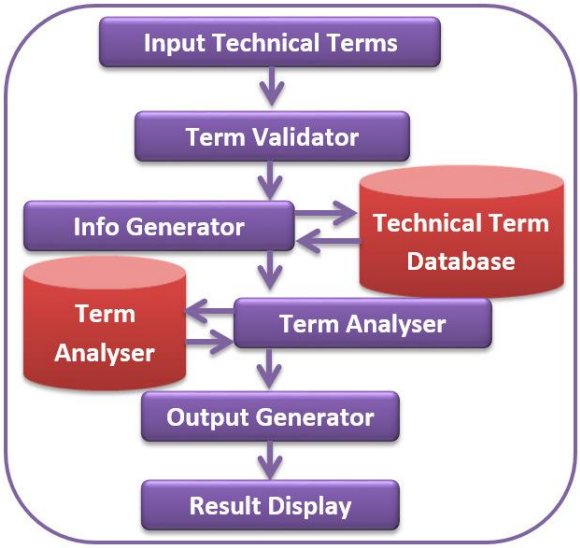

1.2. सूचना जेनरेटर (Info Generator)

पूर्व घटक से सत्यापित पारिभाषिक शब्द से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्द सूचना डेटाबेस की सहायता से सामान्य जानकारी निर्मित करता है जिसका प्रारूप तालिका 3 में देखा जा सकता है तथा जानकारी एवं पारिभाषिक शब्द को Term Analyzer को भेजता है, अन्यथा "जानकारी अभी तक उपलब्ध नहीं है" इस टैग के साथ सन्देश प्रदर्शित करता है।

1.3. टर्म विश्लेषक (Term Analyzer)

यह घटक Info Generator नामक घटक से प्राप्त हुई जानकारी को विश्लेषित कर यह मॉड्यूल इन्फो डेटाबेस की सहायता से सम्पूर्ण जानकारी प्रस्तुत करता है, जिसका प्रारूप Table 2 में देखा जा सकता है। अन्यथा "विश्लेषण अभी तक उपलब्ध नहीं है" टैग के साथ यह सन्देश प्रदर्शित करता है।

1.4. ऑउटपुट जनेरेटर (Output Generator)

यह घटक Term Analyzer से प्राप्त जानकारी के आधार पर परिणाम को वेबपेज हेतु सम्पादित करता है और अन्त में यूजर इन्टरफेस पारिभाषिक शब्द की सम्पूर्ण जानकारी प्रदर्शित करता है।

Figure 2: यूजर इन्टरफेस

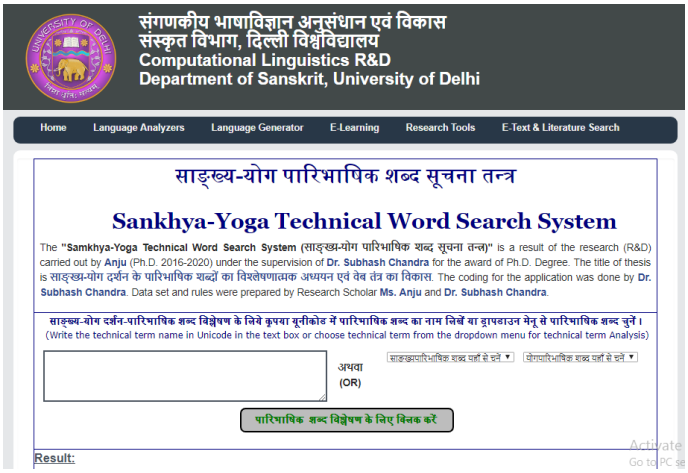

6. परिणाम एवं परिचर्चा (Result & Discussions)

परिणाम स्वरूप यह तन्त्र सांख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्दों का एक ई परिभाषा कोश प्रस्तुत करता है। जिसमें एक यूजर इन्टरफेस संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय की वेबसाइट http://cl.sanskrit.du.ac.in पर उपलब्ध है। वेबपेज का प्रारूप Figure 2 में दिखाया गया है। इस इन्टरफेस में एक टेक्स्ट बॉक्स है, जिसमें यूजर सांख्य-योग दर्शन के पारिभाषिक शब्द को देवनागरी (UTF-8) में टाइप कर सकता है। अथवा यूजर को ड्रोपडाउन मेन्यू से पारिभाषिक शब्द का चुनाव कर, बटन पर क्लिक करने से परिणाम प्राप्त कर होता है। तदुपरान्त टेक्स्टबॉक्स के नीचे वाले बटन (पारिभाषिक शब्द विश्लेषण के लिये क्लिक करें) पर क्लिक करते ही परिणाम प्रदर्शित हो जाता है। परिणाम का प्रारूप Figure 3 में देखा जा सकता है।

खोजे गये शब्दों से सम्बन्धित शब्दों की सूचना निम्नलिखित प्रकार से प्रदर्शित होती है।

पारिभाषिक शब्द का नाम: इसमें खोजे गये शब्दों को रखा गया है। जिससे इस शब्द के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

पारिभाषिक शब्द का लक्षण: इसमें खोजे गये शब्द का लक्षण अलग-अलग स्रोतग्रन्थों (योग-सूत्र, व्यासभाष्य, भोजवृत्ति, तत्त्ववैशारदी, योगवार्तिक आदि) के अनुसार रखा गया है। साथ ही साथ किसी भी लक्षण के ऊपर कर्सर ले जाने पर इसका हिन्दी अर्थ स्वतः प्रकट हो जाता है।

पारिभाषिक शब्दों का विश्लेषण: इसमें खोजे गये शब्द के विषय में विशेष जानकारी शामिल की गई है। इसमें किसी शब्द का सामान्य अर्थ क्या होता है और किसी दर्शन में उसका अर्थ कैसे परिवर्तित हो जाता है। इन सबका विशद विवरण यहां पर दिया गया है।

इस सिस्टम को बहुत ही यूजर सहायक बनाया गया है। जिससे इसका प्रयोग करना बहुत ही आसान हो गया है। उपयोगकर्ता सांख्य-योग दर्शन में उपलब्ध पारिभाषिक शब्द को खोज सकता है और उस शब्द का पूरा विश्लेषण प्राप्त कर सकता है और परिणाम देवनागरी लिपि में UTF -8 प्रारूप में पूर्ण विवरण के साथ प्राप्त होता है।

Figure 3: परिणाम

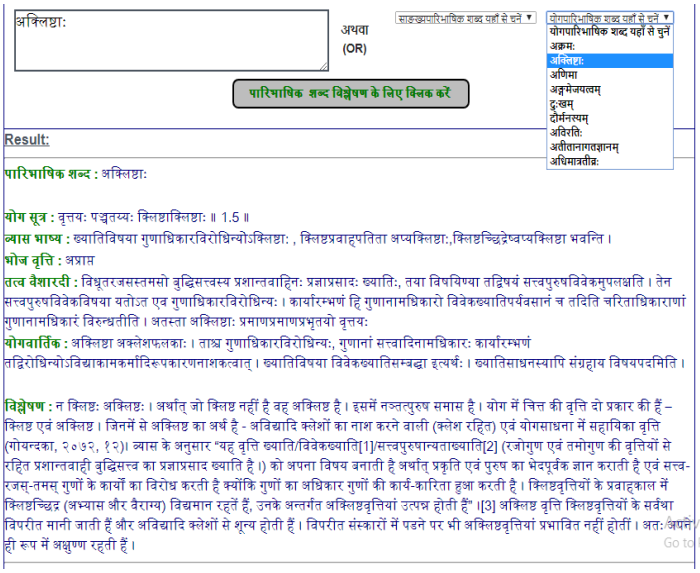

7. निष्कर्ष (Conclusions)

निष्कर्ष स्वरूप हम यह कह सकतें हैं कि यह एक अपने तरीके का अनोखा सिस्टम है। जिसका उपयोग ऑनलाइन किया जा सकता है। इस प्रकार का आज तक कोई भी सिस्टम उपलब्ध नही है। इस सिस्टम का प्रयोग करके कोई भी व्यक्ति दर्शन के तकनीकी शब्दों से अवगत हो सकेगा।

8. शोध की भावी सम्भावना (Future Directions)

यह सिस्टम अभी केवल सांख्य-योग दर्शन के परिभाषा कोश के लिये बनाया गया है। जो देवनागरी लिपि में उपयोगकर्ता (user) द्वारा लिखने पर परिणाम भी देवनागरी लिपि में देता है। इस प्रणाली के माध्यम से अन्य दर्शन के लिये इस प्रकार का सिस्टम बनाया जा सकता है और साथ ही साथ अन्य भाषाओं में भी इसका निर्माण किया जा सकता है।

References

1. Anju and Chandra, S., 2018, *Development of Web-Based Dictionary for the Technical Terms of Sāṁkhya-Yoga Philosophy*. International Journal of Creative Research Thoughts, ISSN 2320-2882, Volume 6:1, pp.724-728.
2. Anju and Chandra, S., 2018, *Mining of the Technical Terms of Sāṃkhya-Yoga Philosophy*, Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR), ISSN 2349-5162, Volume 5:5, pp.66-72.
3. Banerji, SC, 1989, *A Companion to Sanskrit Literature.* Motilal Banarsidass, Delhi.
4. Bhattacharya, R. & Larson, G. (eds.), 1987, *The History and Literature of Sāṃkhya*. The Encyclopedia of Indian Philosophies, Volume 4: Samkhya, a Dualist Tradition in Indian Philosophy. Princeton University Press.
5. Chandra, S. and Anju, 2017, *Puranic Search: An Instant Search System for Puranas*. Language in India, ISSN 1930-2940, Volume 17:5.
6. Frants, V. I., Shapiro, J., Taksa, I., & Voiskunskii, V. G. (1999). Boolean search: Current state and perspectives. *Journal of the American Society for Information Science*, *50*(1), 86-95.
7. Gautam, K., 2009, *योगसूत्र अनुक्रमणिका,* M.Phil. Dissertation, J.N.U., Delhi.
8. Grimes, John A, 1996, *A concise dictionary of Indian philosophy*: Sanskrit terms defined in English. Suny Press.
9. India. Commission for Scientific and Technical Terminology, 1999, *भारतीय दर्शन परिभाषा कोश*, नई दिल्ली: वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग.
10. Jain, S., 2007, *Dictionary of Sankhya, Yoga & Vedanta*. J.N.U., Delhi.
11. James, M.B., 2002, *Dictionary of philosophy and psychology*. Definition - Oriental Philosophy.
12. Kumar, Jalaj, 2016, *वेब आधारित ऋग्वेदीय खोज एवं अनुक्रमणिका तन्त्र का विकास,* M.Phil. Diss. Special Centre for Sanskrit Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi.
13. Potter, K. H., 1970, *Bibliography of Indian philosophies.*
14. Potter, K. H., Larson, G. J., & Bhattacharya, R. S., 2014, *The Encyclopedia of Indian Philosophies, Volume 4: Samkhya, A Dualist Tradition in Indian Philosophy*. Princeton University Press.
15. Potter, Karl H., Gerald James Larson and Ram Shankar Bhattacharya, 2014, *The Encyclopedia of Indian Philosophies, Volume 4: Samkhya, A Dualist Tradition in Indian Philosophy*, Princeton University Press.
16. Project of History of Indian Science, Philosophy and Culture , https://en.wikipedia.org/wiki/Project_of_History_of_Indian_Science,_Philosophy_and_Culture, Obtained on Nov 27, 2018
17. Rao, K. L. S., & Kapoor, K. (Eds.). (2010). *Encyclopedia of Hinduism*. Rupa.
18. Sanjay, 2008, *ब्रह्मसूत्र अनुक्रमणिका*, M.Phil. Dissertation, J.N.U., Delhi.
19. Singh, B. N., 1988, *Dictionary of Indian Philosophical Concepts*. Asha Prakashan.
20. Singh, U.K., 2009, *वेदांत-अनुक्रमणी*, M.Phil. Dissertation, J.N.U., Delhi.
21. Swami, A., 2015, *A Conceptual Dictionary of Technical Terms in Yoga Philosophy*, Vidyanidhi Prakashan, Delhi.
22. Tripathi, K., 1994, *सांख्य-योगकोशः*. Chaukhamba Vishvabharati, Varanasi.
23. Yadav, V. & Upadhyaya, P., 2009, *Yogashabdkosh*. M.Phil. Dissertation, J.N.U., Delhi.
24. अवस्थी, बच्चूलाल, शर्मा, बालकृष्ण (सम्पा.), 1997, *भारतीय दर्शन बृहत्कोश (भाग-१).* शारदा पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
25. शास्त्री, वासुदेव, 1928, *न्यायकोशः*, भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट पूना।
26. शुक्ल,दीनानाथ, 1993, भारतीय दर्शन परिभाषा कोश . प्रतिभा प्रकाशन।

RRIJM 2015, All Rights Reserved